पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

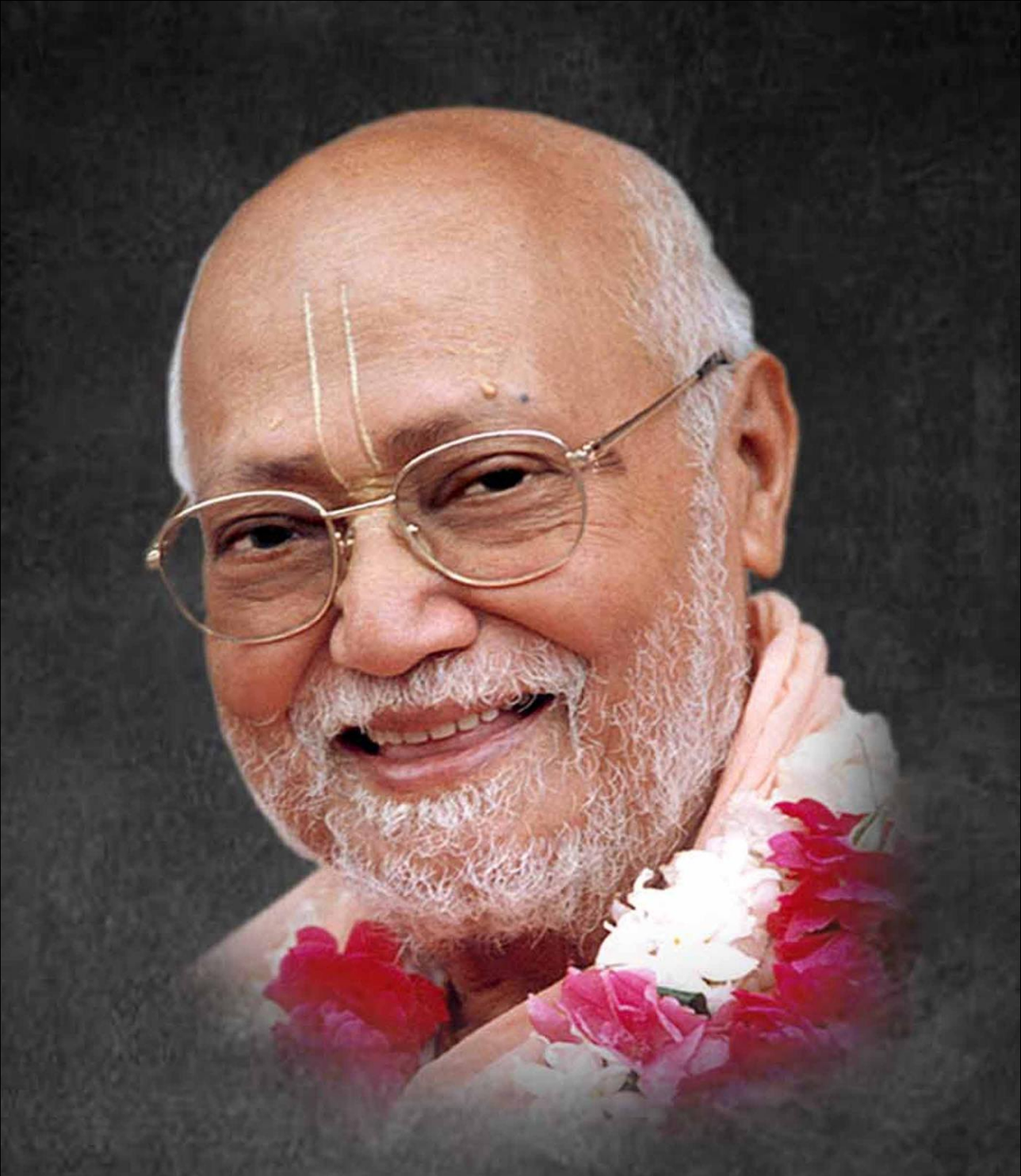

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 10

वनगाँव में श्रील गुरुदेव

भक्ति ही भगवान के निकट ले जाती है, भक्ति ही भगवान् को दिखाती है। परम पुरुष भक्ति के वश हैं। इसलिये भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ है।

पश्चिम बंगाल में 24 परगना जिला के अन्तर्गत वनग्राम (वनगांव) के आदिवासियों के निमन्त्रण पर श्रील गुरुदेव ने जब अपने पार्षदों सहित कोलकाता-सियालदह से रेलगाड़ी में यात्रा करते हुये 1 फरवरी 1975 शनिवार सवेरे 9 बजे वनग्राम स्टेशन पर शुभपदार्पण

किया तो स्थानीय नर-नारियों ने विपुलभाव से उनका स्वागत किया। श्रील गुरुदेव का अनुगमन करते हुये रेलवे स्टेशन से भक्त गण संकीर्त्तन शोभायात्रा के रूप में पैदल ही संकीर्त्तन करते हुये साहापाड़ा नामक स्थान पर आये। तब श्रील गुरुदेव जी के साथ थे- परमपूज्यपाद त्रिदण्डि यति श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज जी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विज्ञान भारती महाराज जी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति सुहृद दामोदर महाराज जी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विजय वामन

महाराज जी और श्री नोनीगोपाल वनचारी । सारी व्यवस्था की देख रेख करने के लिए वहाँ एक दिन पहले पहुँचे थे श्री गोलोकनाथ ब्रह्मचारी और श्री परेशानुभाव ब्रह्मचारी।

साहापाड़ा पल्ली में 1 फरवरी शनिवार से 3 फरवरी सोमवार तक तीन दिन का विराट धर्म-सम्मेलन हुआ जिसमें श्रील गुरुदेव जी ने विभिन्न वक्तव्य-विषयों पर सारगर्भित भाषण प्रदान किए। परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज जी, श्रीमद्

भक्ति विज्ञान भारती महाराज जी और श्रीमद्भक्ति सुहृद दामोदर महाराज जी ने भी अपने-अपने भाषण दिये 12 फरवरी विवार सुबह, शहर के विभिन्न मार्गों से विराट नगर-संकीर्त्तन शोभायात्रा निकाली गई। धर्म सभाओं में बहुत से शिक्षित और उच्च घराने के व्यक्तियों का समावेश हुआ था। विभिन्न दिनों में प्रधान अतिथि रूप से उपस्थित थेश्री भूपेन्द्र नाथ सेठ, श्री देवकीदुलाल दत्त, श्री निर्मल काजुरी, श्री हरेकृष्ण दास और श्री निर्मल राय चौधरी। मतिगंजनिवासी श्रील गुरुदेव जी के

श्रीचरणाश्रित गृहस्थभक्त श्री ब्रजबल्लभ दासाधिकारी (ब्रह्मानन्द प्रभु) के विशेष प्रयास से वन गाँव में चैतन्यवाणी का प्रचार सफल हुआ था।

श्रीलगुरुदेव